डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 3 जुलाई 2008 मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-तीसरा | जुलाई-2008 | मासिक पत्रिका

2
दाता जी कित्थे गयों
(एक शब्द)

3
दिल से दिल की राह
(बाबाजी द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश)
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

5
दर्द
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग -परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

23
प्रश्न-उत्तर
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब
अहमदाबाद

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया

उप सम्पादिका : नंदिनी **विशेष सलाहकार :** गुरमेल सिंह नौरिया

सहयोग : रेणु सचदेवा, रोजी आनन्द व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

Mobile : 9950 55 66 71 & 94144 - 80303
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

दाता जी कित्थे गयों

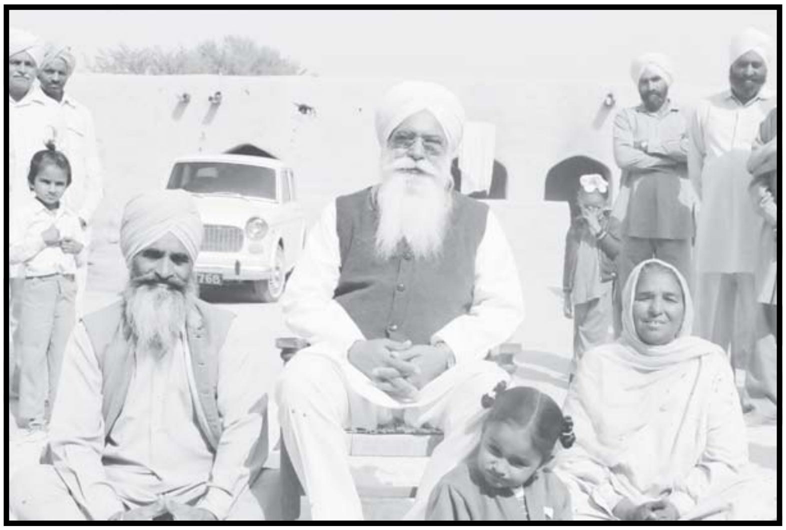

दाता जी कित्थे गयों, प्रीतमां वे कित्थे गयों, (2)

1. *हत्थी अपनी बाग सजाके,*
आपे तूं ऐह बूटे लाके, (2)
नहीं सी छड्ड जाणां सानूं, मालिया वे,
कित्थे गयों.....
2. *पता जे हुंदा नाल ही जांदे,*
कानू ऐड्डे दुःखड़े उठांदे, (2)
जे चिर लौंणा सी, रखवालिया वे,
कित्थे गयों.....
3. *हुणं तां डोले जग दा बेड़ा,*
बन्ने लावे होर हुण केड़ा, (2)
तेरे बाजो कौंण बचावे, खुशहालिया वे,
कित्थे गयों.....
4. *सुण फरियाद 'अजायब' दी आवीं,*
आके दुःखियां दा दर्द मिटावीं, (2)
सोहणा आके दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे,
कित्थे गयों.....

✫✫✫

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश

दिल से दिल की राह

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

मैंने इस गुफा के बारे में कई बार बहुत कुछ बताया है। आप लोगों ने इसके बारे में मैगज़ीन में भी पढ़ा है। आप जानते हैं कि मेरी सेहत ठीक नहीं इसलिए मैं ज्यादा नहीं बोल सकूंगा।

वह समय बहुत सुहावना था जब मेरे दयालु गुरुदेव ने प्यार से मेरी आँखों पर हाथ रखकर दुनिया की तरफ से आँखें बंद करके इन्हें अंदर की तरफ खोला। आप दिलों की जानते थे, जब आपका दिल करता आप खुद ही चलकर आते थे। गुरु बेइंसाफ नहीं होता। वह जानता है कि कौन सच्चे दिल से उसकी याद में बैठा है? उसके लिए दूर नज़दीक का कोई फर्क नहीं होता।

इस गरीब आत्मा ने सच्चे दिल से अपने गुरुदेव के आगे प्रार्थना की, ''मैं दुनिया के सब सहारे छोड़कर इस गुफा के अंदर जाने लगा हूँ तूने मेरा पर्दा रखना है।'' सतगुरु जीव को 'नाम' देकर इसे सच्चखंड का हकदार बनाते हैं। जीव पर निर्भर है कि यह कितने समय में सच्चखंड पहुँचकर गुरु के स्वागत का फायदा उठाता है।

सन्त अपने सतसंगों में बताते हैं अगर आप अभ्यास नहीं कर सकते तो सन्तों पर भरोसा रखें और सन्तों से प्यार करें। भूल से भी गुरु को इन्सान न समझें। वह परमात्मा इन्सान का चोला धारण करके हम रोगियों को इस संसार से मुक्त करवाने के लिए आता है।

मैं आशा करता हूँ आप यहाँ से गुरु का हुक्म मानने की प्रेरणा लेकर जाएं; **दिल से दिल की राह** बनाएं।

***

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दर्द

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल को नमस्कार करता हूँ। जो शब्द-रूप होकर कण-कण में व्यापक हैं, ये हमारी दुःखी आत्मा की खातिर तन धारण करके संसार में आए। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

दंडवत वंदना अनिक बार सर्वकला समरथ।
डोलन ते राख्यो प्रभु नानक दे घर हत्थ।।

बेशक सन्तों ने दया करके हमें रास्ता बता दिया है फिर भी जो धुर-धाम पहुँचे हैं वे ही जानते हैं कि कदम-कदम पर खतरा है। हम नहीं जानते कि किस समय काल ने हमें अंदर ही गलत रास्ते पर डाल देना है! ताकि हम भूले-भटके भी इस तरफ न आ सकें। हमें पता है अगर हमारी कोई दुनियावी चीज़ खो जाए तो हम रात-दिन उसके बारे में सोचते हैं, हमें नींद नहीं आती; कहते हैं हमें चिंता लगी हुई है कि हमारी कीमती चीज़ खो गई है।

एक दुनियावी चीज़ के पीछे हमारी जिंदगी का अमन-चैन आलोप हो जाता है। ठंडे दिल से सोचकर देखें! जिन आत्माओं के अंदर बचपन से ही यह **दर्द** और तड़फ है कि मेरी बहुत कीमती चीज़ खो गई है! वह मुझे क्यों नहीं मिल रही?

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मेरी नींद बचपन से ही गायब हो गई थी।'' इसी तरह मैं बताया करता हूँ कि सुबह का सोना मेरी विरासत में नहीं लिखा था। उसकी वजह एक ही थी कि जिंदगी में यही रहा कि पता नहीं वह चीज़ कब मिलेगी, किसके जरिए मिलेगी? जो रूहें संसार में परमात्मा की तलाश को लेकर आती हैं वे अपनी तलाश जारी रखती हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि मैंने बाईस साल खोजा अगर आपको पहले दिन ही यह तृप्ति हासिल हो जाती; युगों-युगों से बिछड़ा हुआ परमात्मा मिल जाता तो आपको बाईस साल खोजने की क्या जरूरत थी? महाराज कृपाल ने भी अपनी जिंदगी में गुरु की तड़फ और गुरु की खोज को अपने दिल में रखा।

बेशक महात्मा धुरधाम से ही परमात्मा-रूप होते हैं फिर भी इस संसार में आकर मर्यादा को कायम रखते हैं, कमाई करते हैं। आप गुरु नानकदेव जी का इतिहास पढ़ते हैं। गुरु नानकदेव जी ने कड़ी साधना की, ग्यारह साल कंकड़-पत्थरों का बिछोना किया। आपके पिता अमीर आदमी थे आपको अच्छे बिछोने दे सकते थे लेकिन जिसके अंदर बिछोड़े का **दर्द** उठता है वही इस **दर्द** को जानता है।

अस्पताल के कमरे में दो बिस्तर होते हैं एक बिस्तर पर मरीज और दूसरे बिस्तर पर उस मरीज की देखभाल करने वाला होता है। **दर्द** के बारे में मरीज को पता है। उसकी संभाल करने वाला तो यही कह सकता है कि तू हौसला रख लेकिन उसे **दर्द** के बारे में ज्ञान नहीं कि मरीज को कितना **दर्द** है? वह ज्यादा से ज्यादा यही कह सकता है कि इसे रात को नींद नहीं आई, बैचेनी बनी रही।

जिस तरह दुनियावी **दर्द** के इलाज के लिए हम अच्छे डाक्टर की खोज करते हैं अगर उस डाक्टर से हमें फायदा नहीं होता तो हम दूसरे डाक्टर के पास जाते हैं। दिल में ख्याल होता है कि किसी न किसी तरह हम तंदरूस्त हो जाएं! इसी तरह जिन आत्माओं के अंदर परमात्मा के बिछोड़े का **दर्द** है वे किसी अच्छे काबिल सन्त की खोज करते हैं उसके पास पहुँचते हैं। उनके दिल में चाह होती है कि कोई न कोई हमारे जख्म पर मलहम लगाए। जब तक उनके जख्म पर मलहम नहीं लगती तब तक उन्हें आराम नहीं आता, शान्ति नहीं आती, तृप्ति नहीं आती।

मैं बताया करता हूँ कि ऐसी आत्माएं जब संसार में आती हैं, उनके ऊपर गरीबी का असर नहीं होता बेशक वे कितनी भी गरीबी में

क्यों न हों वे उसी लक्ष्य को आँखों के आगे रखते हैं जिसे वे धुर से लेकर आते हैं। बेशक वे अमीर घर में पैदा हो जाएं! वे अमीरी को भी लात मार देते हैं क्योंकि उनका अमीरी से कोई लगाव नहीं होता। हाँलाकि मालिक ने उन्हें दुनिया के सब पदार्थ दिए होते हैं। वे बचपन से ही परमात्मा के बिछोड़े में उदास रहते हैं। जब उन्हें परमात्मा का भेद बताने वाला, उनके जख्म पर मलहम लगाने वाला मिल जाता है तो उन्हें शान्ति, तृप्ति हो जाती है।

बेशक दुनियावी रोग हमें बैचेन कर देते हैं। जैसे बच्चे की बीमारी, स्त्री का बिछोड़ा, पति का बिछोड़ा ये सब असहाय **दर्द** हैं अगर धन-दौलत चला जाए! ओहदा छिन जाए! हमें बड़े सदमें लगते हैं लेकिन ये सब आरजी बिछोड़े और सदमें हैं। क्या हमने कभी आत्मा के **दर्द** के बारे में सोचा? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

संसार रोगी नाम दारू, मैल लग्गे सच बिना।

हम सब आत्माएं रोगी हैं। बाहर की कोई जड़ी-बूटी इनके लिए कारगर नहीं। बेशक आप कितने भी ग्रन्थ पढ़ लें! हिमालय से जाकर कितनी भी जड़ी-बूटियाँ ले आएं! किसी अच्छे वैद्य के शिष्य भी बन जाएं! सब कुछ सीख लें फिर भी आत्मा की दवाई नहीं मिलती। आत्मा की दवाई सिर्फ उनके पास है जो इस संसार में मालिक की तरफ से उस दवाई को देने के लिए आते हैं।

जब बादलों में से बारिश का पानी धरती पर गिरता है तो वह बिल्कुल साफ और पवित्र होता है। जब वह पानी गंदी जगह पर गिरता है तो मैला हो जाता है उसमें से बदबू आने लगती है; वह अपने आपको उस गंद का हिस्सा समझने लगता है लेकिन जब उस पानी को सूरज की तपिश मिलती है वह भाप बनकर उड़ता है तो सीधा बादलों में जाकर समा जाता है फिर उसे पता लगता है कि मैं तो ऐसे ही अपने आपको गंद का रूप समझता था, मैं तो साफ और पवित्र था। इसी तरह हमारी आत्मा प्रभु-परमात्मा की अंश है। कबीर साहब कहते हैंः

कहो कबीर ऐह राम की अंश, जस कागज पर मिटे न मंश।

जिस तरह कागज को जला देने पर भी उस पर लिखे हुए स्याही के अक्षरों की निशानी बनी रहती है। इसी तरह हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। यह आत्मा किसी हथियार से नहीं काटी जा सकती आग से जलाई नहीं जा सकती। यह आत्मा पवित्र है।

आत्मा ने ऊपर के मंडलों से नीचे आकर मन का साथ ले लिया, मन ने इन्द्रियों और विषय-विकारों का साथ ले लिया और इस आत्मा ने अपने आपको उस गंद का एक हिस्सा समझना शुरू कर दिया। अब इसे न अपने घर का पता है न पति-परमात्मा का पता है कि वह कहाँ है, मैं किस घर की मालिक हूँ? जिस घर में सदा रहना था उसकी याद भूल गई। अब हमें सारा दिन सोते-जागते, उठते-बैठते इस दुनिया की याद है, इस दुनिया के ही स्वपन आते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जो घर छड्ड गँवावणा, सो लग्गा मन माहे।
जित्थे जाए तुध वरतणा, तिसकी चिंता नाहे।।

हमनें जहाँ जाना है उस घर की चिंता नहीं कि वह घर कैसा है, हम वहाँ कैसे और किसकी मदद से पहुँचेंगे? अपने साथ क्या लेकर जाएंगे और वहाँ हमारा संगी-साथी कौन होगा? हम देखते हैं कि संसार में जिनके साथ हमारा इतना लगाव होता है वे हमें श्मशान भूमि में पहुँचा आते हैं या हम उन्हें श्मशान भूमि में पहुँचा आते हैं। वहाँ लकड़ी का टुकड़ा तोड़कर फैंक आते हैं कि आज से तेरा हमारा कोई नाता नहीं। मिट्टी की मुट्ठी भरकर उस कब्र पर रख आते हैं कि तू आज से हमें मिट्टी की तरह लगता है। बहुत से इलाकों में नीम का पत्ता भी चबाते हैं कि आज तू हमें नीम की तरह कड़वा लगता है।

अगर हमारा कोई रिश्तेदार रात को स्वपन में दिखाई दे जाए तो हम पंडितों भाईयों से पूछते हैं कि कोई उपाय बताए कि वह हमें क्यों दिखाई देता है? आप देख लें! उस आत्मा ने हमारे पास क्या आना है वह तो अपनी योनि में चली जाती है। बुजुर्गों ने हमारे लिए कितनी

कुर्बानी की होती है अगर हमारी यारदाश्त के मुताबिक रात को सोते हुए कहीं उनका ख्याल आ जाए तो हम कितने भयभीत हो जाते हैं।

गुरु रामदास जी महाराज अपनी तड़फ के बारे में लिखते हैं, ''मेरे दिल के अंदर तड़फ उठी, प्यार उठा कि जिससे मिलकर शान्ति, तृप्ति आ सकती है जिंदगी में उससे मिलना चाहिए।'' ऐसी आत्मा के अंदर परमात्मा से मिलने का **दर्द** होता है, तड़फ होती है।

हम जिस समाज में पैदा होते हैं हमारे माता-पिता किसी न किसी धर्मस्थान की पूजा करते हैं। बच्चों का प्यार और भक्ति भी उसी जगह से शुरू होती है। हम मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च में जाते हैं। वहाँ के पुजारी, मुल्ला, भाई और पादरी एक ही श्रेणी में आते हैं। वे लोगों को परमात्मा की बातें सुनाते हैं लेकिन खुद परमात्मा से दूर होते हैं। वे नीले-पीले कपड़े पहन लेते हैं, हाथ में माला पकड़ लेते हैं; तिलक लगा लेते हैं। हम सोचते हैं अगर हम भी इस तरह माला हाथ में ले लें, तिलक लगा लें या उनकी तरह कपड़े पहन लें तो हमें परमात्मा मिल जाएगा। शायद परमात्मा से मिलने का यही तरीका है।

जिन लोगों ने ऐसे कपड़े नहीं पहने होते हम उनसे लड़ते-झगड़ते हैं। यहाँ तक कि हम मजहब की ऐसी अग्नि में जलते हैं कि एक-दूसरे का कत्ल करने में भी परहेज नहीं करते और अपने आपको मजहब के रखवाले कहलवाते हैं। सन्त हमें प्यार से समझाते हैं, ''देखो प्यारेयो! यह तो तन का लिबास है, आत्मा का इससे कोई सम्बंध नहीं। आप किसी ऐसे के पास जाएं जिसने जिंदगी में महात्मा से मिलकर अपने दिल का जख्म दूर कर लिया है, मलहम लगा ली है।''

गुरु साहब कहते हैं, ''जब मेरे दिल में तड़फ उठी मैंने परमात्मा को ऊँची-नीची जगह पर खोजा लेकिन मुझे परमात्मा नहीं मिला।'' मुझे किसी ने बताया कि गुरु अमरदेव जी महाराज ने जिंदगी में अपनी आत्मा के रोग को हटा लिया है। जब मैं उनके पास गया तो उन्होंने कहा, ''देख भई! बाहर से कुछ लाने की जरूरत नहीं न कपड़े बदलने

की, न समाज बदलने की, न बाल-बच्चे छोड़ने की जरूरत है। तुझे जिस परमात्मा की खोज है वह तेरे अंदर बैठा है।'' उस समय उनका यह वचन मेरे अंदर तीर की तरह लगा।

बेशक हम पढ़े-लिखे और समझदार थे लेकिन जब सन्तों के कहने के मुताबिक अंदर तवज्जो दी तो आत्मा वहीं लोट-पोट हो गई कि ओह! हमारा प्यारा हमारे अंदर था। हम इससे बिछड़कर युगों-युगों में फिरते रहे, इससे मिल न सके! अब हम गुरु का धन्यवाद करते हैं कि गुरु ने हमें बाहर पढ़ने-पढ़ाने या रीति-रिवाज में नहीं लगाया न ही कोई समाज छुड़वाया। गुरु नानकदेव कहते हैं:

सतगुरु पूरा भेटया पूरी होवे जुगत।
हँसेदंया खेलेंदया पहनेंदया विचों होवे मुक्त।।

आप प्यार से कहते हैं कि पूरा सन्त परमात्मा में समाया होता है। वह परमात्मा तक पहुँचने के सारे भेद का ज्ञाता होता है। ऐसा साधु जिसने खुद जिंदगी में वह काम किया होता है वह हमें उस रास्ते पर चला सकता है। मैं बताया करता हूँ कि किसी महात्मा के चरणों में जाने से पहले आप खोज करें कि क्या उसने अपनी जिंदगी में कोई कमाई की है? यह जिंदगी का मसला है।

रविदास जी कहते हैं, ''पूरा साधु गुरु में पूरी तरह समाया होता है। वह गुरु के हाथों में एक कठपुतली की तरह होता है, बिना दाम अपने गुरु के हाथों में बिक चुका होता है; अपना तन-मन-धन सब कुछ गुरु पर वार चुका होता है और अपना सर्वस्व वारने के लिए भी तैयार रहता है। ऐसा शिष्य बहुत भाग्य से मिलता है।''

आप प्यार से कहते हैं कि ऐसा साधु परमात्मा तक पहुँचने का भेद जानता है। वह दुनिया में कोई कौम, मजहब या लड़ाई की ट्रेनिंग देने के लिए नहीं आता। वह तो हमसे परमात्मा की भक्ति करवाकर परमात्मा से मिलवाने के लिए ही आता है। ऐसा साधु परमात्मा का धन है और परमात्मा का प्राण है।

रविदास जी कहते हैं, ''हे परमात्मा! मुझे ऐसे साधु की संगत बख्श जो तेरा ज्ञान करवाते हैं। हमें उस ज्ञान पर चलने का बल बख्श। साधु को समझ लेना कोई मामूली बात नहीं। साधु हमें 'शब्द-नाम' का भेद देते हैं उस भेद पर चलने से ही हमें पता लगता है कि यह साधु कैसा है?'' अमेरिका की कहावत है किसी पेड़ का फल खाने से पता चलता है कि इस पेड़ का फल कितना मीठा है? इसी तरह साधु के दिए हुए 'नाम' की कमाई करने से हमें पता लगता है कि इस साधु का क्या तर्जुबा है। ऐसे महात्मा कभी भी संसार पर भार बनकर नहीं आते बल्कि वे अपना भार खुद उठाते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमगति को प्राप्त महात्मा किसी पर बोझ बनकर नहीं आते बल्कि वे हमारे मुफ्त के सेवादार होते है वे सारी जिंदगी हमारी मुफ्त सेवा करते हैं। जो महात्मा अपने खर्च के लिए साध-संगत पर बोझ बनता है या कोई भेंट-पूजा लेता है उस महात्मा के चरणों में भूलकर भी मत्था न टेकें।

सन्तों ने तन-मन-धन और सुरत-शब्द की थोड़ी बहुत सेवा रखी है लेकिन 'सुरत-शब्द' की सेवा सबसे ऊँची सेवा है। हम सुरत-शब्द की सेवा तभी कर सकते हैं जब मन को, तन-धन और सब तरफ से हटा लें अगर हम धन-पदार्थ साध-संगत और लंगर में लगाते हैं तो पता नहीं कितनी बीमारियों और मुकद्दमों से बचे रहते हैं! इसी तरह संगत के लिए दरियां बिछा देना, लंगर पका लेना, लंगर वरता देना, पानी भर देना ये सब तन की सेवा है। इससे हमारा तन सुच्चा हो जाता है।

गुरु गोविंद सिंह जी के इतिहास में आता है आपको प्यास लगी। उस समय आपका सेवादार पास नहीं था। आपने एक लड़के से पानी लाने के लिए कहा। वह लड़का पानी का लोटा भरकर ले आया। गुरु साहब ने पानी पीने से पहले उस लड़के के हाथों की तरफ देखा और कहा, ''बेटा! तेरे हाथ इतने नरम क्यों हैं?'' उस लड़के ने कहा, ''मैं पहली बार आपके लिए ही पानी लाया हूँ। मैं अपने माता-पिता का

इकलौता बेटा हूँ इसलिए मैंने कभी कोई कारोबार नहीं किया।'' आपने कहा कि तू इस पानी को ले जा यह अपवित्र पानी है। किसी और से कह दे कि वह मुझे पवित्र पानी पिला दे। भाई गुरदास जी कहते हैंः

धृग सेवा बिन हाथ पैर होर नेह फल करनी।

महात्मा हमें बताते हैं कि हम 'सुरत-शब्द' की सेवा तभी कर सकते हैं जब हम अपने तन-मन और धन को संगत की सेवा में लगाते हैं। आप स्वामी जी महाराज का इतिहास पढ़कर देख लें! आपने साध-संगत में अपना पैसा लगाया। बाबा जयमल सिंह जी के पास जो कुछ था उन्होंने उसे साध-संगत में लगाया। महाराज सावन और कृपाल का जीवन पवित्र था, आप दुनिया में एक नमूना बनकर आए। परमात्मा ऐसे महात्मा के लिए दरवाजा खोलता है।

ऐसे महात्मा को परमात्मा तक पहुँचने का ज्ञान होता है। वे कोमल दिल और परोपकारी होते हैं, कभी खाली नहीं बैठते। वे परोपकार की बात करते हैं या परमात्मा से जुड़े रहते हैं। वे दुखी का दुख सहन नहीं कर सकते। वे सदा ही अपने सेवकों की मुनासिब मदद करते रहते हैं।

हम रोज ही गुरु-शिष्य के बीच में देखते हैं, प्रेमियों के पत्रों से पता लगता है और दर्शनों के समय मिलने से भी पता लगता है कि किस तरह हमारी मदद हुई? ऐसे महात्मा इतना कुछ करके भी दिखावा नहीं करते। वे कभी भी सेवक के जिम्मे कोई अहसान नहीं करते बल्कि सेवक की मदद करना अपना फर्ज समझते हैं। वे सदा अपने गुरु की महिमा करते हैं कि जो कुछ है गुरु का ही है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनेंः

कैसी करूँ कसक उठी भारी, मेरी लगी गुरु संग यारी।।

एक प्रेमी आत्मा दूसरी आत्मा से कहती है, ''बहन! मैं चाहती हूँ कि गुरु के पैरों में झुककर उससे कहूँ कि तू धन्य है तूने मुझे 'नाम' दिया है। मैं उसके आगे अपना दिल खोलकर रख दूँ, उसे सब कुछ बता

दूँ कि मेरे अंदर कितनी तड़फ है? गुरु अर्जुनदेव जी महाराज एक जगह अपनी तड़फ के बारे में लिखते हैं:

जो दीसे गुरु सिखड़ा तिस निव निव लग्गा पाए जिओ।
आखा बिरथा जी के मेरा सभ्भे दुःख गँवाए जिओ।।

मेरे दिल में बहुत तड़फ उठी है, मैं इस तड़फ को बुझाने के लिए क्या करूँ, कहाँ जाऊं? शिष्य का मतलब शिक्षा लेना है अगर हमारे पास शिक्षा नहीं तो हम किस तरह शिष्य कहलवा सकते हैं? हमें शिक्षा मिली हुई है कि हमने शराब नहीं पीनी, कबाब नहीं खाना। किसी का बुरा नहीं सोचना, अपनी नेक कमाई से गुजारा करना है। अपना भजन-सिमरन करना है।

मैंने कई महात्माओं के चरणों में जाकर विनती की। परमात्मा सावन ने मुझसे कहा था, ''तुझे वस्तु देने वाला तेरे घर आएगा।'' महाराज सावन का एक खास प्यारा शिष्य बलूचिस्तानी मस्ताना था। मैं मस्ताना जी के पास बहुत बार गया। एक बार रात का समय था मौका देखकर मैंने मस्ताना जी से विनती की, ''साईं! क्या आप वही हैं जिसके बारे में सावन शाह ने कहा था कि तुझे वस्तु देने वाला तेरे घर आएगा?''

मस्ताना जी ने खुश होकर कहा, ''मैं वह नहीं हूँ। मुझ पर तो सावन की बख्शीश है। तुझे वस्तु देने वाला तेरे घर आएगा तू इंतजार कर। वह इतनी कमाई वाला है अगर तोपें चलती हों और वह अपने दोनों हाथ ऊपर कर दें तो तोपें रूक जाएंगी। उसने सारी जिंदगी बहुत कमाई और साधना की है।''

जब वक्त आया तो महाराज कृपाल ने खुद ही मेरे घर में संदेश भेज दिया कि मैं आ रहा हूँ। आप जानते थे कि कौन मेरी याद में बैठा है? उनके लिए दूर-नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता अगर हम सच्चे दिल से पुकारते हैं तो वह नज़दीक से नज़दीक हमारी तड़फ सुनता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि परमात्मा इंसान की खोज में रहता है। परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं इंसान का बनना मुश्किल

है। मुझे जिंदगी में न कोई उनकी निन्दा करने वाला मिला न बड़ाई करने वाला मिला। आप अपनी कहनी और करनी के पूरे थे।

दम दम तड़फूं छिन-छिन तरसूँ, चढ़ रही मन में बिरह खुमारी

यह **दर्द** घंटे, हफ्ते या दो-चार साल का नहीं है। साँस ऊपर जाता है तब भी **दर्द** है साँस नीचे आता है तब भी **दर्द** है, अंदर खटक लगी हुई है। यह दर्द तो मिलाप से ही दूर होता है। हम जानते हैं कि इश्क दो तरह का है एक मिजाजी और दूसरा हकीकी। जिन्हें मिजाजी इश्क लग जाता है वे संसार की परवाह नहीं करते। चाहे लोग उन्हें कितने भी ताने मारें, वे लोग गले कटवा लेते हैं; बाजारों में जूते खा लेते हैं लेकिन अपनी आदत नहीं छोड़ते क्योंकि उनके दिल में अपने माशूक के लिए तड़फ होती है। यह तो एक बेशर्मी है लेकिन सच्चा इश्क, गुरु के प्रति प्यार हकीकी इश्क है। महात्मा चतुरदास जी कहते हैंः

इश्क मिजाजी और हकीकी इको जेहा व्यवहार करे।
खाना रज ना खांदा आशिक निन्द्र नाल ना प्यार करे।
दिल अंदर तस्वीर यार दी मुँह थी नाम पुकार करे।
तन सुखोंदा तीले वांगू दोने नैन बहार करे।।

मिजाजी और हकीकी इश्क का एक जैसा ही व्यवहार है। ऐसे आशिक की आँखों से नींद उड़ जाती है। उसके दिल और जुबान पर सदा ही गुरु का दिया हुआ सिमरन रहता है। आँखों में गुरु का स्वरूप समाया रहता है। वह सोते हुए भी सोचता है कि मनमोहनी मूरत मेरे साथ सो रही है। चलते हुए सोचता है कि मनमोहनी मूरत मेरे साथ फिर रही है। एक सैकण्ड के लिए भी मनमोहनी मूरत उसकी आँखों से दूर नहीं होती। जब याद आती है तो सोया हुआ उठकर बैठ जाता है, उस समय आँखों से पानी बहना शुरू हो जाता है।

मजनूं का लैला के साथ बहुत प्यार था। जब लैला मजनूं से पहले अपना शरीर छोड़ गई तो मजनूं बहुत पछताया कि यह तो शर्मिन्दगी के सिवाय और कुछ नहीं। मिजाजी इश्क एक पुल की तरह है और

हकीकी इश्क एक मंजिल है जिसमें शान्ति है। हजरत बाहु ने भी अपनी तड़फ का जिक्र इस तरह किया हैः

पोह माघ मंगे खरबूजे, मैं कित्थों ल्यावां वाड़ी हूं।

यह वह चीज माँगता है जो मेरे पास नहीं है। आजकल तो लोग हर चीज रेफ्रीजरेटर में रख लेते हैं। किसी भी ऋतु मे कोई भी चीज़ ले सकते हैं लेकिन जिस समय की यह बानी है उस समय रेफ्रीजरेटर का इंतजाम नहीं था। सर्दियों की सब्जी, फल गर्मियों में नहीं मिलते थे और गर्मियों वाले सर्दियों में नहीं मिलते थे।

हम संसारी जीव दुनियावी चीज़ो में फँसे हुए हैं। हम दिन-रात मन के कहने पर दुनियावी चीज़ें माँग रहे हैं। वे चीज़े मिल जाती हैं हम फिर भी तृप्त नहीं होते और चीज़ें माँगने लगते हैं। दिल में शौक उठता है कि मुझे धन मिले! धन मिल जाता है तो धन को रखने का दुःख लगा रहता है। शादी की मन्नत माँगते हैं, शादी हो जाती है। जब पति के साथ अनबन हो जाती है तो वही घर नर्क बनकर रह जाता है।

मैं पश्चिम की एक लड़की की बात बताया करता हूँ कि उसकी शादी हुई। उसने पत्र लिखा कि मुझे ऐसा लगा कि मेरी शादी एक दुश्मन के साथ हो गई है। अब आप सोचकर देख सकते हैं कि उसके दिल में कितना **दर्द** होगा? शादी तो ख़ुशी के लिए की जाती है लेकिन उसी शादी से कितनी नफरत होती है?

अगर बच्चा नहीं तो हम तड़फते हैं अगर वही बच्चा बीमार हो जाए तो रात को नींद नहीं आती अगर वही बच्चा परमात्मा को प्यारा हो जाए तो फिर नींद कहाँ? प्यारेयो! मेरे कहने का भाव कि हम इस संसार में जो कुछ देखते हैं उसे प्राप्त करने के लिए दिन-रात तड़फते हैं रोते हैं लेकिन परमात्मा के लिए न हम रोते हैं न ही तड़फते हैं। हम सिर्फ दिखावे के लिए ही कहते हैं दया करो, दया करो! लेकिन हम जानते हैं कि दया के लिए हमारे दिल में कितनी तड़फ है।

सुलगत जिगर फटत नित छाती उठन लगी हिय से चिन्गारी।।

जिस तरह किसी के जिस्म के किसी भी हिस्से पर आग की चिन्गारी रख दें वह कितना तड़फता है! चिन्गारी को उठाने के बाद भी उसे शान्ति नहीं आती उसका ख्याल वहीं लगा रहता है। इसी तरह जब सेवक के अंदर गुरु के प्यार की तड़फ उठती है तो वह भी दिन-रात आग की तरह सुलगता रहता है। वह जब तक सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके गुरु को प्रकट नहीं कर लेता उस समय तक उसकी हालत ऐसी ही रहती है।

नैनन नीर बहत जस नदियाँ डूब मरी माया मतवारी।
ठंडी आह उठे पल पल में छाय गई अब प्रीत करारी।।

जब साँस ऊपर जाता है, साँस नीचे आता है तो ठंडी आह! ही निकलती है। देखा जाता है कि जब किसी को कोई घाटा हो जाए या उसका कोई सज्जन-मित्र संसार से चला जाए तो वह किस तरह ठंडे हौंके भरता है। नज़दीक बैठने वाला पूछता भी है कि क्यों भई! तू ठंडे हौंके ले रहा है क्या बात है? वह अपना **दर्द** बताता है जबकि यह तो दुनियावी **दर्द** है। हम दुनियावी चीज़ों के लिए हौके भरते हैं। स्वामी जी महाराज अपना तर्जुबा बताते हैं, ''प्रेमी के अंदर भी इसी तरह का **दर्द** है वह इसी तरह के ठंडे हौके लेता है कि वह मुझे कब मिलेगा जिसकी मुझे तलाश है, मैं जिसकी याद में बैठा हूँ।''

तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे काल करम पच हारी।।

एक तरफ समाज है, लोक-लाज है; जिसने होश संभालने से पहले ही हमें जंजीरों से जकड़ रखा है। इसे छोड़ना और इसमें बदलाव लाना बहुत ही मुश्किल है। दूसरी तरफ जब गुरु अपनी दया-मेहर से हमें 'नाम' की कमाई में लगा लेता है तब अंदर प्रीत जाग उठती है फिर प्रेमी दुनिया की लोक-लाज, रीति-रिवाज को तिलांजलि दे देता है। उसे लोग इस तरफ से हटाते हैं, ताने मारते हैं लेकिन प्रेमी छोड़ नहीं

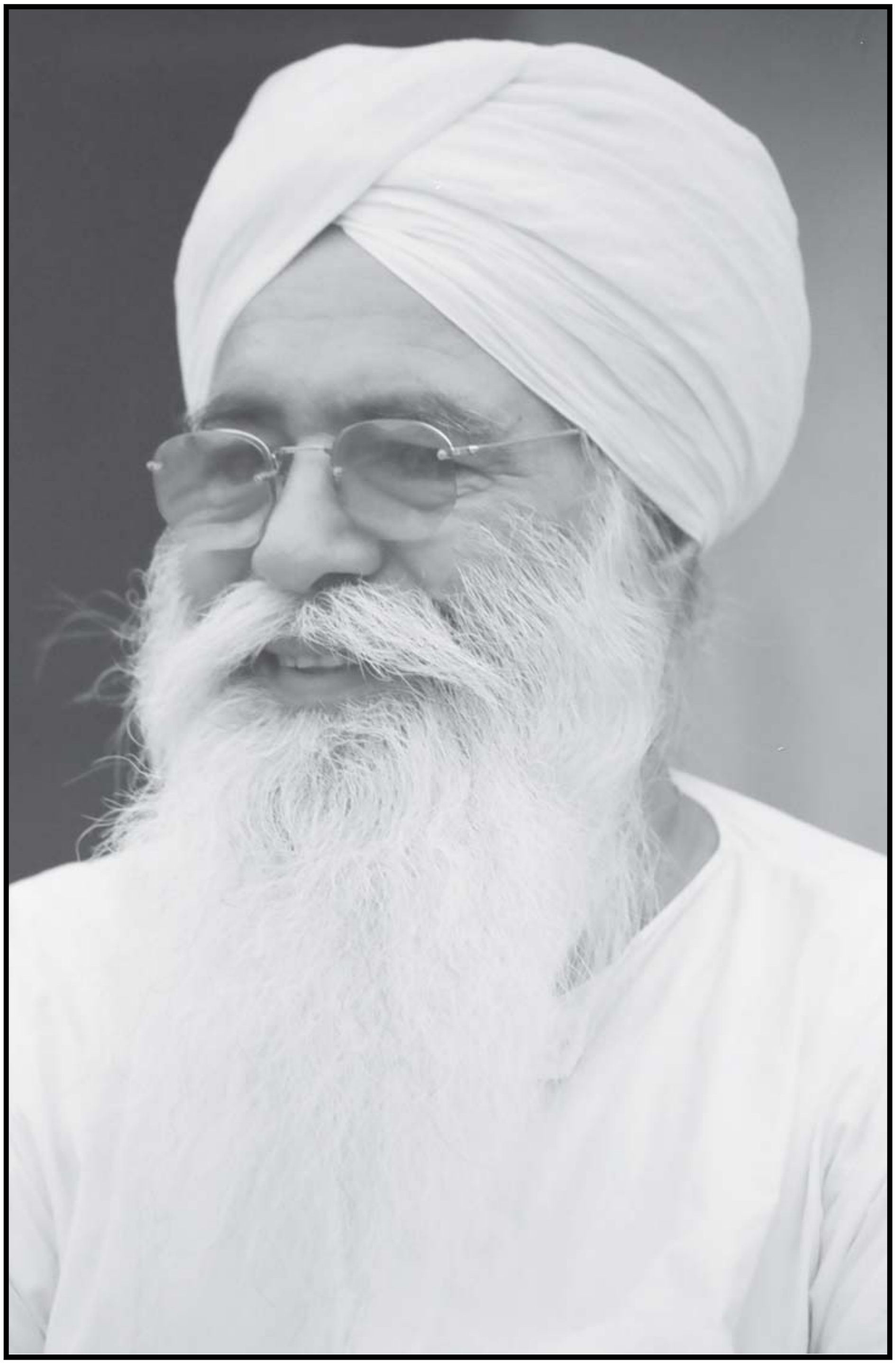

सकता, न ही तोड़ सकता है। प्रेमी एक क्षण के लिए भी इससे दूर नहीं होता। जिस तरह पहले दुनिया की रीति छोड़नी मुश्किल थी उसी तरह गुरु परमात्मा से लगाया हुआ प्यार तोड़ना भी मुश्किल हो जाता है।

जब गुरु तेग बहादुर साहब को दिल्ली में कैद किया गया उस समय उनके साथ भाई मतिदास, सतिदास और भी दो-तीन सेवक थे जिन्हें बहुत ही कष्ट दिए गए। भाई मतिदास से कहा गया कि अगर इस गुरु में कोई शक्ति है तो यह पिंजरे में क्यों कैद होता? यह खुद बचकर दिखाए! तू इसकी प्रीत छोड़ दे नहीं तो तुझे आरे से चीर दिया जाएगा। तू यह कह कि मैं गुमराह हो गया था लेकिन मतिदास ने यही कहा, ''अगर आप मुझ पर इतने मेहरबान हैं और मुझ पर दया करना चाहते हैं तो मेरा मुँह मेरे गुरु के पिंजरे की तरफ करके बड़ी खुशी से मुझे चीर दें।'' ऐसे ओर भी बहुत से सेवकों के वाक्य आते हैं कि वे उस प्रीत को छोड़ नहीं सके, तोड़ नहीं सके। उन्हें पता है कि यह हमारे बस की बात नहीं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे ऐसी माधो खिंच तनी।।

जब सतगुरु जीव को 'नामदान' देते हैं तब काल से डोरी लेकर ऊपर के मंडलों में जीव जहाँ का अधिकारी है वहाँ बाँध देते हैं। जीव की ताकत नहीं कि उसे तोड़ दे या छोड़ दे। कई बार सेवक काल के बहकावे में आकर भटक जाता है लेकिन जिंदगी का तर्जुबा है कि यह ठोकरे खाकर आखिर वहीं आ जाता है। यह ऐसी प्रीत है जो तोड़ने से टूटती नहीं, छोड़ने से छूटती नहीं।

सुरत निरत दोऊ कासध कीने बिथा लिखूं अब सारी।
पतियाँ भेजूँ गुरु दरबारा अब लो खबर हमारी।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''सेवक के अंदर ताकत नहीं कि यह अपने आप मन-इन्द्रियों से छुटकारा प्राप्त कर सके या काल के जाल को तोड़ सके। गुरु पर्दे के पीछे इसकी मदद करता है लेकिन फिर भी

जब यह बेबस हो जाता है तो सच्चे दिल से गुरु को ही पुकारता है।'' हम दुनियादार लोग जब अपने गुरुदेव को पत्र लिखना चाहते हैं तो दुनियावी कागज लेते हैं और उस पर ऐसी बातें लिखते हैं कि मेरा यह काम है। मुझे इस चीज़ का दुःख है। बेरोजगारी है। बच्चा बीमार है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सुरत और निरत आत्मा की दो शक्तियाँ हैं। सुरत सुनने वाली और निरत देखने वाली शक्ति को कहते हैं। मैं गुरु को चिट्ठी लिखता हूँ सुरत और निरत का कागज बनाकर उस पर अपना **दर्द** लिखता हूँ कि तेरे बिना मेरी क्या हालत है? मैं तेरे आगे पुकार करता हूँ कि तू आकर मुझे संभाल, मुझसे मिल।''

जब बच्चा माँ के लिए तड़फता है तब माँ कितना भी जरूरी कारोबार क्यों न करती हो वह भागकर बच्चे को छाती से लगाती है उसकी जरूरत पूरी करती है। इसी तरह जो आत्मा गुरु के लिए तड़फती है गुरु जरूर आता है; वह बेइंसाफ नहीं चाहे सात समुद्र का रास्ता हो।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त के लिए दूर-नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरु ने सेवक की संभाल के लिए दुनियावी साधन पर नहीं जाना।'' गुरु जानता है कि कैसे सेवक की संभाल करनी है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उसका जहाज न आग से चलता है न हवा से और न ही स्टीम से चलता है। वह 'शब्द-नाम' का जहाज है।'' अगर हम नौं द्वारे खाली करके स्थूल, सूक्ष्म, कारण के सारे पर्दें उतारकर गुरु को प्रकट करेंगे तो पता चलता है कि गुरु कहाँ है? मैं पत्र लिखकर गुरु के दरबार सच्चखंड में भेजता हूँ।

नगर उजाड़ देश सब सूना तुम बिन जग अंधियारी।।

अब यह नगर (शरीर) सूना हो गया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार के पाँचों डाकुओं ने इस नगर को लूट लिया है। अब तेरे बिना मेरी मदद कौन कर सकता है?

कौन सुने और कौन सँवारे सब मोहे दीन निकारी।

अब कौन सुने? कोई बचा हुआ ही हमारी बात सुन सकता है हमें बचा सकता है। जिसके पास जाते हैं वही रोगी है; कोई काम का रोगी है। कोई क्रोध का रोगी है। माथे पर टीका लगाकर लोगों को महात्मा बन-बनकर दिखाते हैं लेकिन सच्चाई यह है कि अंदर कोरा पाखंड भरा होता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

मैं पूछूँ तुमसे ऐसे, तुम साध कहावत कैसे।
काम न छोड़ो क्रोध न छोड़ो।।

इन पाँच डाकुओं से कोई विरला ही बचा हुआ है, जो बचा हुआ है वही सुनेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

बही जात नैया मझ धारा तुम बिन कौन उभारी।।

मेरी नैया काम, क्रोध के उमड़ते हुए समुद्र में बह रही है। हम कहते हैं कि हम भोग भोगते हैं, चस्के लेते हैं लेकिन प्यारेयो! चस्के तो ये काम, क्रोध, लोभ ले जाते हैं; ये आपको भोग रहे हैं।

खेवटिया क्यों देर लगाई क्यों कर करूँ पुकारी।
मैं मरी जाऊँ जीऊँ अब कैसे तुम मेरी सुध न सँवारी।
डालो जान देओ सरजीवन मैं तुम पर बलिहारी।।

आत्मा कहती है, ''हे सतगुरु! मुझे इन्होंने लूट लिया है। मैं कमजोर हो गई हूँ तू मेरी सुध ले तेरे बिना मेरा कौन है? तू मुझे संजीवनी बूटी दे जिससे मुर्दे में जान पड़ जाती है। मेरे अंदर अपना 'नाम' प्रकट कर।''

वचन सुनाओ दरश दिखाओ हरो पीड़ मेरी सारी।
राधा स्वामी सुनो हमारी मैं तुम्हरे आधारी।।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में आत्मा की फोटो खींचकर हमारे सामने रखी है। जब आत्मा के अंदर परमात्मा से मिलने की तड़फ पैदा होती है तो किस तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आत्मा की पूँजी लूटते हैं तब वह आत्मा गुरु के आगे पुकार करती है। गुरु उस आत्मा की संभाल करता है क्योंकि गुरु बेइंसाफ नहीं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसके दरवाजे पर बैल बँधा है उसे फिक्र होता है कि इसे कब पानी पिलाना है? कब धूप से छाया में करना है? जब हमारे अंदर सच्चा प्यार जाग जाता है तब दुनिया की लोक-लाज पर लगाकर उड़ जाती है।''

हम शाह बल्ख बुखारा का इतिहास पढ़ते हैं कि वह सारी सहूलियतों का मालिक था, उसकी रियासत में उसका हुक्म चलता था। लेकिन प्यार प्यार ही होता है। उसके दिल में तड़फ उठी कि परमात्मा से मिलना चाहिए। उसने हर जगह खोज की। हिन्दुस्तान पहले से ही ऋषियों-मुनियों का देश रहा है। उसने यहाँ भी खोज की। किसी ने उसे बताया कि कबीर साहब सच्चे-सुच्चे महात्मा हैं तू उनके पास जा। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जहाँ चाह वहाँ राह।''

जब बल्ख बुखारा कबीर साहब के पास पहुँचा तो कबीर साहब ने उससे पूछा, ''तू कौन है?'' उसने कहा कि मैं शाह बल्ख बुखारा हूँ। कबीर साहब ने कहा, ''मैं गरीब ताना बुनता हूँ मजदूरी करके अपना पेट पालता हूँ और तू एक बादशाह है तेरा मेरा गुजर कैसे होगा?'' उसने कहा कि मैं बादशाह नहीं एक भिखारी बनकर आपके दरवाजे पर आया हूँ। आप मुझे जो कुछ भी रूखा-सूखा देंगे मैं खा लिया करूंगा।

कबीर साहब की सेवा करते हुए शाह बल्ख बुखारा को छह साल बीत गए। माता लोई ने कबीर साहब से कहा, ''यह एक बादशाह है, इतने समय से हमारे घर में ताना बुनने की सेवा कर रहा है, इसे कुछ देना चाहिए।'' कबीर साहब ने कहा कि अभी बर्तन तैयार नहीं।

माता लोई ने कहा कि मैं कैसे जानूँ कि अभी यह बर्तन तैयार नहीं? कबीर साहब ने लोई से कहा कि तू बाहर से कुछ छिलके इत्यादि लेकर छत पर चली जा। मैं जब इसे बुलाऊंगा तू इसके ऊपर ये छिलके डाल देना। कबीर साहब ने बल्ख बुखारा को बुलाया कि इधर आ, यहाँ भी काम है। लोई ने उसके ऊपर छिलके वगैरहा डाल दिए। बल्ख बुखारा ने ऊपर देखकर बहुत जोश से कहा, ''अगर मैं बल्ख बुखारा में होता तो देख लेता।'' वह और भी बहुत कुछ बोला। जब इंसान को क्रोध आता है तो वह बोलने में कोई कमी नहीं छोड़ता।

माता लोई ने कहा, ''मैं तो इसे बहुत अच्छा इंसान समझती थी लेकिन अभी इसके अंदर बल्ख बुखारा भरा हुआ है।'' इस तरह छह साल और बीत गए। कबीर साहब ने लोई से कहा कि अब बर्तन तैयार है। लोई ने कहा कि मुझे तो पहले जैसा ही लगता है। कबीर साहब ने कहा, ''पहले तो तू छिलके वगैरहा लेकर छत पर चढ़ी थी अब कीचड़ वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जा।'' कबीर साहब ने उसी तरह फिर बल्ख बुखारा को बुलाया, माता लोई ने उसके ऊपर कीचड़ फेंक दिया। बल्ख बुखारा ने कहा, ''मेरे ऊपर कीचड़ फेंकने वाले तेरा भला हो मैं तो इससे भी गंदा हूँ। मेरे अंदर तो इससे भी ज्यादा कीचड़ है।''

जिसे बारह साल सेवा करके 'नाम' मिला हो! कबीर साहब जैसा सन्त और शाह बल्ख बुखारा जैसा सेवक मिलना कोई आसान बात नहीं। कबीर साहब जैसे ही उसे 'नाम' देने लगे उसकी आत्मा सच्चखंड पहुँचनी शुरू हो गई। जब हमारे अंदर प्यार जाग उठता है तो दुनिया की लोक-लाज, बादशाही सबको लात मारकर हम महात्मा की सेवा में जाकर बैठ जाते हैं, उनके कहे मुताबिक अपने जीवन को ढ़ाल लेते हैं।

स्वामी जी महाराज ने हमें बताया कि ये पाँच डाकू दिन-रात इस नगर को लूट रहे हैं। हम सच्चे दिल से 'शब्द- नाम' की कमाई करके गुरु की दया से ही इन पाँच डाकुओं से बच सकते हैं, नहीं तो बचने का स्वप्न भी नहीं ले सकते।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब (अहमदाबाद)

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न : *कर्म और मोह का आपस में क्या रिश्ता है, हम दुनिया में लोगों के साथ कर्मों की वजह से बंधे हुए हैं या कर्म हमारे मोह की वजह से पैदा होते हैं; क्या कर्म और मोह दोनों अलग-अलग हैं?*

उत्तर : हाँ भई! बड़ा अच्छा सवाल है। हमें पता है कि मिश्री और मिश्री की मिठास को अलग नहीं किया जा सकता। इसी तरह मोह और कर्म ये लफ्ज़ जरूर अलग-अलग है लेकिन दोनों का गहरा सम्बंध है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम अच्छे-बुरे कर्मों के कारण पिछले लेन-देन के रिश्ते की वजह से ही इस संसार में आते हैं। पिछले जन्म में हमने जिसके साथ अच्छा समय बिताया है, जिसके साथ हमारा अच्छा लेन-देन है। यहाँ हम मियां-बीवी, बाप-बेटे, भाई-भाई या माता-बेटे के रूप में जन्म ले लेते हैं। यहाँ हमारा आपस में प्यार होगा अगर पिछले जन्म में हमारा लेन-देन बिगड़ा हुआ है तो हम जहाँ जाकर जन्म लेगें चाहे वहाँ हमारा रिश्ता कितना भी गहरा क्यों न हो! वहाँ खटपटी मची रहेगी।''

प्यारेयो! मोह बंधन का कारण है, यही कर्म को जन्म देता है। हम एक-दूसरे के मोह में बंधे होने के कारण ही एक-दूसरे को फायदा पहुँचाने के लिए ठग्गी, बेईमानी और ऐसे-ऐसे बुरे कर्म कर लेते हैं, जिन्हें जुबान भी बयान नहीं कर सकती। जो कर्म करता है भुगतान उसी को करना पड़ता है। परमात्मा ने हमारे अंदर कोई बुरी ताकत नहीं रखी लेकिन जब हम इस ताकत का इस्तेमाल गलत तरीके से करते हैं तब हम इस बुराई की पकड़ में आ जाते हैं।

सन्तों ने इस मंडल (स्थूल दुनिया) को कर्मभूमि कहकर बयान किया है। उन कर्मों का भुगतान करने के लिए हम किसी न किसी रूप में इस संसार में आते हैं। मोह बुरी चीज़ नहीं अगर मोह न होता तो वह परमात्मा कभी भी इंसानों में इंसान बनकर न आता।

प्यार अंशा-अंशी होता है। मोह के कारण ही परमात्मा हमारी खातिर टट्टी-पेशाब का खोल धारण करके आता है अगर हम यही मोह गुरु के साथ, 'नाम' के साथ करें तो मोह अच्छी चीज़ है लेकिन हम अपना बंधन दुनिया के पदार्थों के साथ जोड़ते हैं। हम जिस मंडल पर आए हुए हैं यहाँ हम कर्म किए बिना नहीं रह सकते।

सन्त हमें प्यार से समझाते हैं कि आप बुरे कर्म न करें जिनकी वजह से आपको फिर इस संसार में आना पड़े। बुरे कर्मों से बचें अगर आप तन, मन और धन से किसी की सेवा करते हैं तो आप उससे कोई आशा न रखें, अपने मन में उस सेवा का अहंकार न लाएं। आशा रखने से उसका भुगतान करने के लिए फिर इस संसार में आना पड़ता है।

एक प्रेमी :- *आमतौर पर गुरु अपने सेवकों से अपनी शान और अपनी ताकत क्यों छिपाकर रखता है?*

बाबा जी :- हाँ भाई! यह बहुत दिलचस्प सवाल है अगर आपके पास कीमती सामान है और आप उसकी नुमाईश करें! हो सकता है कोई उसे चुरा ले जाए तो आपका बहुत नुकसान हो जाएगा। आप कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ते हैं जिसमें काल ने दयाल से

वायदे लिए हैं कि मैं जिसे जहाँ जन्म दूँ वह वहीं खुश रहे। किसी को भी पिछले जन्म का ज्ञान न हो कि मैं अब जो दुःख भोग रहा हूँ यह मेरे किन पापों का फल है अगर सुख भोग रहा हूँ तो यह मेरे किन पुण्यों का फल है। सभी अपनी-अपनी योनि में खुश हैं अगर कोई सूअर को मारता है तो वह भी अपनी जान बचाने की कोशिश करता है।

प्यारेयो! काल भी दयाल की ही शक्ति है। इसे खुश रखना भी जरूरी है क्योंकि इसने दयाल की सेवा की है। काल ने परमात्मा से वायदे लिए हैं कि सन्त संसार में कोई चमत्कार न दिखाएं, जीवों से 'नाम' की कमाई करवाकर ही वापिस ले जाएं। सन्त उन वायदों का पालन करते हैं।

सन्तों पर गरीबी-अमीरी का कोई फर्क नहीं पड़ता। वे संसार में आकर अपने मकसद को नहीं भूलते। उनका ख्याल हमेशा प्रभु के चरणों में लगा रहता है। वे दुनिया की मान-बड़ाई को तुच्छ समझते हैं।

प्यारेयो! हमारा मन हमारे साथ धोखा करता है। सन्त सेवकों से अपनी शक्ति नहीं छिपाते। जो अंदर जाते हैं और सन्तों का कहना मानते हैं सन्त अपनी सारी बरकतें लेकर उनके अंदर बैठ जाते हैं।

आमतौर पर हम बाहर की घटनाओं को ही करामात समझते हैं। जैसा कि मैं बीमार था, मैंने सन्तों को बताया तो मैं ठीक हो गया। लड़के को तकलीफ थी, लड़का ठीक हो गया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐसे लोग सन्तमत को नहीं समझते।''

हम पशुओं वाले कर्म करते हैं। आत्मा को परमात्मा के साथ मिला देना सन्तों की सबसे बड़ी करामात है। सन्त इंसान को परमात्मा के सामने खड़ा करके परमात्मा से यह प्रार्थना करते हैं, ''यह तेरा बच्चा है, तुझसे भूल बख्शवाने आया है।''

महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बार गुरु तेगबहादुर जी आगरा में संगत के साथ बैठे थे। वहाँ पर एक मुसलमान जाति का आदमी आया। गुरु तेगबहादुर जी उससे गले लगकर

मिले। वहाँ बैठे हुए मजहबी लोगों के दिल में ख्याल आया कि गुरु साहब एक मुसलमान से गले लगकर मिले हैं। ऐसा प्यार तो हमारे हिस्से में भी नहीं आया। गुरु साहब ने उनके दिल की भावना को भाँपकर कहा कि पिछले समय में यह आदमी लाहौर की एक रियासत का गर्वनर था। यह बहुत दयादृष्टि वाला इंसान था।

आमतौर पर गर्वनर के लिए सुगन्धित फूलों से सेज सजाई जाती थी। वहाँ से एक योगी करामात के जरिए आसमान में उड़ता हुआ जा रहा था। उस योगी के दिल में ख्याल आया कि मैं थोड़ी देर इस सेज पर आराम कर लूँ! जैसे ही फूलों की सुगन्धि उसके दिमाग में चढ़ी वह सो गया। वह जिस शक्ति (गुटका) से उड़ता था वह शक्ति उसके मुँह से निकलकर गिर गई। गर्वनर ने देखा कि यह आदमी मेरे राजमहल में कैसे सोया हुआ है? उसके दिल में ख्याल आया कि इसे जगाना ठीक नहीं। गर्वनर ने देखा कि उस आदमी के मुँह से कोई चीज़ निकलकर गिरी हुई है; उसने वह गुटका उठाकर अपने पास रख लिया।

सुबह होने पर योगी की आँख खुली तो उसने घबराकर इधर-उधर देखा क्योंकि उसकी उड़ने वाली शक्ति खो चुकी थी। वह जानता था कि यह राजमहल है अगर मैं पकड़ा गया तो मौत की सजा मिलेगी! गर्वनर ने योगी से पूछा, ''तुम क्यों घबराए हुए हो?'' योगी ने कहा, ''मेरे मुँह में गुटका था जो खो गया है।'' गर्वनर ने उसे वह गुटका दे दिया। योगी गुटका मुँह में डालकर उड़ गया।

वह योगी जब अपने गुरु के पास पहुँचा, गुरु ने उससे देर से आने का कारण पूछा? लाहौर में उसके साथ जो कुछ बीता था उसने वह सब अपने गुरु को बताया। गुरु अपने कुछ शिष्यों को साथ लेकर लाहौर पहुँचा। गुरु ने अपने शिष्य की गुस्ताखी के लिए शर्मिन्दगी महसूस की और गर्वनर को कुछ गुटके देकर कहा, ''इन गुटको में यह शक्ति है कि आप उड़कर कहीं भी जा सकते है।''

गर्वनर ने कहा, ''बहुत अफसोस की बात है कि आप लोगों ने सारी जिंदगी जंगलों में समाधियाँ लगाकर कठिन मेहनतें करके ये

शक्तियाँ प्राप्त की हैं; जिन्हें आप ऐसे ही बर्बाद कर रहे हैं? मैं गर्वनर हूँ उड़ने वाला काम में अपने हवाई जहाजों से भी कर सकता हूँ।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऋद्दियाँ-सिद्धियाँ दिखाना अपने खून-पसीने की कमाई को बर्बाद करना है। मेरा अपने सतसंगियों को सख्त आदेश है कि वे कोई करामात न दिखाएं। शरीफ इंसान अपने दस नाखूनों की कमाई ही खाता है।''

दासी अपने मालिक को खुश करने के लिए अपने आप ही काम करती रहती है। ऐसी शक्तियाँ अपने आप ही सन्तों के सेवकों के काम कर जाती हैं। सेवक सन्तों की महिमा गाने लग जाते हैं कि सन्तों नें हमारा यह काम किया वह काम किया। सन्त कहते हैं, ''हम तो आपकी तरह ही इंसान हैं।'' सन्तों की करामात नम्रता और आज़जी है।

प्रश्न : *सेवक को शारीरिक-रूपी गुरु के साथ कैसे रहना चाहिए?*

उत्तर : जिस तरह शुरू-शुरू में हमारी तड़फ होती है अगर हम उसी तरह की तड़फ और भरोसा बनाकर रखें तो गुरु के नज़दीक रहने का बहुत फायदा उठा सकते हैं। जिस सेवक को रोजाना दर्शन मिलते हैं वह गुरु के दर्शनों को उत्तम समझता है लेकिन आमतौर पर ऐसा होता है कि मन उसके अंदर की तड़फ को फीका कर देता है। जब गुरु उससे कोई बात कहता है तो सेवक सोचता है कि गुरु तो मेरे साथ रोज ही बातें करता है और वह उस पर अमल करना छोड़ देता है।

ऐसे कई सेवक अपनी रोजी-रोटी कमाना छोड़ देते हैं और लंगर में संगत जो सेवा डालती है उस लंगर को खाना शुरू कर देते हैं। दूर-दूर से आने वाले प्रेमी उसके पांव छूते हैं तो वह समझता है कि मैं कुछ हूं इसलिए ये मेरे पांव छू रहे हैं। ऐसे प्रेमियों को दर्शनों का जो थोड़ा बहुत फल मिलता है उसे संगत ले जाती है।

मुझे दो महान सतगुरुओं के चरणों में बैठने का मौका मिला है। मैंने कई ऐसे सेवक भी देखे हैं जो सतगुरु की बात नहीं मानते थे। वे

गुरु से क्या फायदा उठा लेंगे? अगर किसी को गुरु के पास रहने का मौका मिलता है तो वह उसे गनीमत समझे। भाई लैहणा ने गुरु नानकदेव जी की तन-मन-धन से सेवा की; उसने ऐसे कई कौतुक देखे लेकिन अपने आपको डोलने नहीं दिया।

महाराज कृपाल सदा ही कहते रहे, ''प्यारेयो! सच्चाई का बीज नाश नहीं होता।'' महाराज कृपाल को महाराज सावन सिंह जी के चरणों में रहने का मौका मिला। महाराज कृपाल ने अपने गुरु सावन के हुक्म को इलाही हुक्म समझा। आप सदा ही उनका हुक्म मानते रहे।

एक बार का चश्मदीद वाक्या है कि महाराज जी के नज़दीक रहने वाले कुछ सेवादार आपस में इतने गरम हो गए कि उन्होंने एक-दूसरे का खून भी निकाल दिया। सेवादारों का कमांडर उन सेवादारों को उस रास्ते पर ले गया जहाँ से महाराज जी ने गुजरना था ताकि वह उन्हें महाराज जी से मिलवा सके। महाराज जी ने उन्हें देख तो लिया लेकिन महाराज जी उस जगह नहीं रुके। कमांडर ने महाराज जी से कहा कि ये सेवक आपसे मिलना चाहते हैं। महाराज जी ने हंसकर कहा, ''क्या! इससे बढ़कर और भी कोई सजा है जो मैं इन्हें दे सकता हूं?'' सोचकर देखें! जो सेवक गुरु के चरणों में रहकर निन्दा-चुगली करते हैं आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, ऐसे सेवक क्या कमाकर ले जाएंगे?

प्रश्न : *भजन गाते समय हमारे अंदर जिस तरह की तड़फ होती है, सिमरन करते समय हम उसी तरह की तड़फ कैसे बना सकते हैं?*

उत्तर : परमात्मा कृपाल सदा यही कहा करते थे, ''शब्द तो सभी अच्छे होते हैं लेकिन अपनी-अपनी आत्मा की पसंद होती है। आपकी जिस शब्द में ज्यादा रुचि है भजन-सिमरन पर बैठने से पहले ऐसा शब्द बोलें जिससे तड़फ पैदा हो।''

प्यारेयो! शब्द बोलते हुए जैसे हमारी तड़फ बनती है उस तड़फ को कायम रखें बल्कि सिमरन के समय यह तड़फ और बढ़ जानी चाहिए। शब्दों के जरिए हम गुरु के आगे नम्रता जाहिर करते हैं और

अपनी कमियां बताते हैं। सिमरन करते हुए सतसंगी को यह नहीं सोचना चाहिए कि मेरा गुरु मेरे पास नहीं। गुरु जब 'नाम' देता है उस समय वह हमारे अंदर तीसरे तिल पर अपनी सीट बनाकर विराजमान हो जाता है और हमारी इंतजार में होता है अगर हमें गुरु के साथ सच्चा प्यार है तो हमारी कोशिश होगी कि वह हमारे सामने आए और हम उससे गले लगकर मिलें।

मैं बताया करता हूं, ''इश्क चाहे मिजाजी है चाहे हकीकी है दोनों में एक जैसी तड़फ होती है अगर किसी का किसी के साथ मिजाजी इश्क है तो उसे रात को नींद नहीं आती, उसकी आंखों के आगे वही मनमोहनी सूरत घूमती रहती है। जब उसे वह मिलता है तो किस तरह गले लगकर मिलता है? यही तड़फ हकीकी इश्क में भी है अगर हमारा गुरु के साथ सच्चा लगाव है तो रात को हमारी आंखों के आगे वही मनमोहनी सूरत रहेगी। हमें नींद नहीं आएगी, हम यही सोचेंगे अगर वह मिल जाए! मैं उससे यह बात करूं, वह बात करूं।''

मेरे पास कई लड़के-लड़कियां आकर अपने प्यार का इज़हार करते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं लेकिन कोई भाग्यशाली जीव ही गुरु के प्यार का इज़हार करता है। ऐसा नहीं कि गुरु से प्यार का इज़हार करने वाले हैं ही नहीं। मेरे पास ऐसे भी आते हैं जो तहे दिल से गुरु का शुक्राना करते हैं।

मैंने आपको कई बार ससी-पुन्नू की कहानी सुनाई है। यह कहानी सन्तबानी मैगज़ीन में भी छप चुकी है। प्रेमियों ने यह कहानी पढ़ी भी है कि ससी के दिल में अपने दोस्त पुन्नू के लिए कितनी तड़फ थी। उसने बारह साल तक न अच्छी तरह खाना खाया और न अच्छी तरह सोई। जब उसका मिलाप पुन्नू से हुआ तो वह सो गई और पुन्नू को उसके दोस्त उठाकर ले गए अगर वह अपनी तड़फ को उसी तरह बनाए रखती, न सोती तो पुन्नू को कोई उठाकर न ले जाता। आख़िर ससी पुन्नू के वियोग में रो-रोकर मर गई।

अगर आप अभ्यास पर बैठने से पहले सिमरन में सुस्ती करेंगे! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार आपके पुन्नू को छिपा लेंगे क्योंकि ये विरोधी हैं आपको आपके दोस्त से नहीं मिलने देंगे अगर आप काम, क्रोध के जाल में आ गए तो हो सकता है आप भजन से उठकर काम-भोग में लग जाएं। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैंः

अगाह को तरांग, पीछा फेर न मोडड़ा।
सिज अवेहा नानक, बोहर न होसी जन्मड़ा॥

हमारी इच्छा आगे जाने की होनी चाहिए। हमें सिमरन के समय तड़फ बढ़ानी चाहिए। दुनिया के बारे में नहीं सोचना चाहिए अगर हम सिमरन में आगे बढ़ते जाएंगे तो दोबारा इस दुनिया में जन्म नहीं लेंगे।

सोहनी ने जब देखा कि घड़ा कच्चा है तो उसे यकीन हो गया अगर मैं इसका साथ लेकर दरिया में जाऊंगी तो मेरी मौत निश्चित है। उसने सोचा कि इश्क बेदाग है मैं इसे दाग क्यों लगाऊं? जिन्होंने गुरु घर में भी इश्क कमाया है उन्होंने दाग नहीं लगने दिया। जब सिमरन के समय हम मन में बुरे ख्याल उठाते हैं तो हम दाग ही लगा रहे होते हैं। हमारा गुरु तीसरे तिल पर बैठकर हमारी हरकतें देख रहा होता है। क्या बुरे ख्याल उठाकर हम गुरु की बेअदबी नहीं कर रहे होते?

किसी दुकान पर चाहे छोटा सा बच्चा भी बैठा हो तो हम वहाँ से कोई सामान नहीं उठाते कि इंसान का बच्चा हमें देख रहा है। हम सोचते हैं कि हमारा पूर्ण गुरु हिन्दुस्तान में बैठा है या सोया हुआ है। ऐसा सोचने वाले गुरु से क्या फायदा उठा लेंगे?

प्यारेयो! हमारा गुरु नज़दीक से नज़दीक हमारे अंदर है। वह हमारी हर हरकत को देख रहा है। सन्तों के पूर्व और पश्चिम के अनेकों सेवक जब चोला छोड़ते हैं तो गुरु कहीं और बैठा होता है लेकिन चोला छोड़ने वाले अगुवाही भरते हैं कि गुरु ने हमारी संभाल की।

महाराज सावन और महाराज कृपाल को चोला छोड़े हुए काफी समय हो गया है। जिन्होंने इन महान हस्तियों को देखा ही नहीं अगर

उनके घर में कोई सतसंगी है, घर पर गुरु की बात चलती है तो वे भी जब चोला छोड़ते हैं तो इस बात की अगुवाही भरते हैं कि उन्होंने भी गुरु पावर की मौजूदगी महसूस की है।

मैं जब पश्चिम और मुम्बई सतसंग करने के लिए जाता हूं तो कई प्रेमियों के माता-पिता मुझे देखने के लिए आ जाते हैं। वे आकर मुझसे कहते हैं, ''हम सिर्फ आपको देखने के लिए आए हैं। आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है।'' उनके दिल में कितनी तड़फ होती है। यह तो अपने-अपने बर्तन का सवाल होता है।

मैं तो आपको यही कहता हूँ कि चलते-फिरते, सोते-जागते, किसी से बातें करते हुए भी तड़फ कम नहीं होनी चाहिए। आप सोते-जागते दुनिया की तड़फ करते हैं तो आपको बुरे सपने आते हैं अगर आपमें गुरु की तड़फ होगी तो क्या आपको गुरु का स्वपन नहीं आएगा? जरूर आएगा।

☆☆☆

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी अहमदाबाद में 8, 9 व 10 अगस्त - 2008 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि नीचे लिखे पते पर पहुंचकर इस कार्यक्रम से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाना विद्यार्थी भवन

(फुटबाल ग्राऊंड के सामने) कांकरिया

अहमदाबाद -380 008

समय सारणी				
सुबह	3.00	से	5.30	भजन-अभ्यास
सुबह	7.00	से	8.00	भजन-अभ्यास
सुबह	10.00	से	11.00	शब्द गाने का कार्यक्रम
सुबह	11.00	से	12.00	सतसंग
दोपहर	12.00	से	12.45	भजन-अभ्यास
शाम	4.00	से	5.00	भजन-अभ्यास
शाम	6.30	से	7.30	सतसंग
रात	8.30	से	9.00	शब्द गाने का कार्यक्रम

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

शैलेष शाह - 9327 011 142 व 9426 726 583